इकाई एक

सपने-सुहाने

अनुताप

मधुऋतु

यह हमारा अधिकार है...

जुलूस

अधिगम उपलब्धियाँ

- लघुकथा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- लघुकथा के शीर्षक की सार्थकता पर चर्चा करके अपना विचार प्रकट करता है।
- सहजीवों से हमदर्दी प्रकट करता है।
- छायावादी कविता की शैली एवं प्रवृत्तियाँ पहचानकर वर्गीकरण करता है।
- छायावादी कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- सौंदर्यानुभूति प्राप्त करता है।
- सूचना का अधिकार अधिनियम की अवधारणा पाकर पत्र तैयार करता है।
- नागरिक का दायित्व निभाता है।
- नाट्यरूपांतर की शैली पहचानता है।
- नाट्यरूपांतर का आस्वादन करके पात्रों के चरित्र पर टिप्पणी लिखता है।
- नाटक का मंचीकरण करता है।
- देशप्रेम का आदर्श पाता है।

Specimen

सुकेश साहनी

जन्म : 5 सितंबर 1956, लखनऊ (उ.प्र)

प्रमुख रचनाएँ : लघुकथा-संग्रह - डरे हुए लोग, ठंडी रजाई

कहानी-संग्रह - मैम्मा और अन्य कहानियाँ

अनुवाद - खलील जिब्रान की लघुकथाएँ

पुरस्कार : डॉ. परमेश्वर गोयल लघुकथा सम्मान

माता शरबती देवी पुरस्कार

डॉ. मुरली मनोहर हिंदी साहित्यिक सम्मान

विशेषताएँ :
* हिंदी लघुकथा क्षेत्र का सशक्त हस्ताक्षर।
* टूटते सामाजिक मूल्यों पर चिंता।
* ग्राम-संस्कृति का भोला-भाला चित्र।
* शहरी सभ्यता के खोखलेपन के पीछे भागते लोगों की व्यथा।
* निम्न मध्यवर्ग की पीड़ा और निराशा।

देन : संवेदनशील भावुक शैली।

संप्रति : भूगर्भ जल विभाग में अधिकारी

ई-मेल : sahnisukesh@gmail.com

लघुकथा आकार में लघु होने के बावजूद कहानी का एक प्रकार है। लघुकथा का भेद मात्र आकारगत न होकर अनुभूति की संश्लिष्टता को लेकर है। लघुकथा कथा का लघुतम रूप है, परंतु कथा-सारांश नहीं। मनुष्य की ओर से ज़िंदगी में कहीं-कहीं जाने-अनजाने गलतियाँ होती हैं। कुछ गलतियाँ ऐसी हैं जिसकी मरहम-पट्टी संभव है, परंतु कुछ का कोई इलाज संभव नहीं। जिस मनुष्य के दिल में सहजीव के प्रति संवेदना है, वह ऐसी हालत में पश्चाताप-विवश बन जाएगा। ***अनुताप*** इसी संवेदना से युक्त है।

श्रमजीवियों की पीड़ा और बेबसी पर सुकेश साहनी की लघुकथा....

Specimen

अनुताप

"बाबूजी आइए ... मैं पहुँचाए देता हूँ।"
एक रिक्शेवाले ने उसके नज़दीक आकर कहा,
"असलम अब नहीं आएगा।" "क्या हुआ उसको?"
रिक्शे में बैठते हुए उसने लापरवाही से पूछा। पिछले चार-पाँच दिनों से असलम ही उसे दफ़्तर पहुँचाता रहा था।

'उसे शाक-सा लगा'- क्यों?

"बाबूजी, असलम नहीं रहा ..."
"क्या?"
उसे शाक-सा लगा,
"कल तो भला चंगा था।"
"उसके दोनों गुर्दों में खराबी थी, डॉक्टर ने रिक्शा चलाने से मना कर रखा था,"
उसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी,
"कल आपको दफ़्तर पहुँचाकर लौटा तो पेशाब बंद हो गया था,अस्पताल ले जाते समय उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया था ...।"

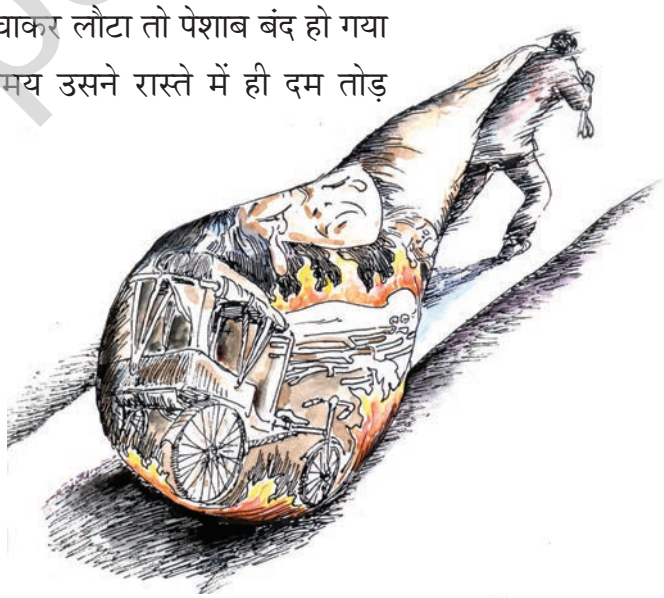

Specimen

आगे वह कुछ नहीं सुन सका। एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया ...। कल की घटना उसकी आँखों के आगे सजीव हो उठी। रिक्शा नटराज टाकीज़ पार कर बड़े डाकखाने की ओर जा रहा था। रिक्शा चलाते हुए असलम धीरे-धीरे कराह रहा था। बीच-बीच में एक हाथ से पेट पकड़ लेता था। सामने डाक बंगले तक चढ़ाई ही चढ़ाई थी। एकबारगी उसकी इच्छा हुई थी कि रिक्शे से उतर जाए। अगले ही क्षण उसने खुद को समझाया था – रोज़ का मामला है... कब तक उतरता रहेगा... ये लोग नाटक भी खूब कर लेते हैं, इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफ़ी होगी... अनाप-शनाप पैसे माँगते हैं, कुछ कहो तो सरेआम रिक्शे से उतर पड़ा था, दाहिना हाथ गद्दी पर जमाकर चढ़ाई पर रिक्शा खींच रहा था। वह बुरी तरह हाँफ रहा था, गंजे सिर पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूँदें दिखाई देने लगी थीं...।

'इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफ़ी होगी'- यहाँ यात्री का कौन-सा मनोभाव प्रकट हो रहा है?

किसी कार के हार्न से चौंककर वह वर्तमान में आ गया। रिक्शा तेज़ी से नटराज से डाक बंगलेवाली चढ़ाई की ओर बढ़ रहा था।

"रुको!"

एकाएक उसने रिक्शेवाले से कहा और रिक्शे के धीरे होते ही उतर पड़ा।

रिक्शेवाला बहुत मज़बूत कदकाठी का था। उसके लिए यह चढ़ाई कोई खास मायने नहीं रखती थी। उसने हैरानी से उसकी ओर देखा। वह किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाए रिक्शे के साथ-साथ चल रहा था।

'वह किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाए रिक्शे के साथ-साथ चल रहा था', क्यों?

Specimen

अनुवर्ती कार्य

➤ **ये प्रसंग किन-किन पात्रों से संबंधित हैं ?**

- उसे शाक-सा लगा।
- उसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी।
- उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया।
- कल की घटना उसकी आँखों के आगे सजीव हो उठी।
- एकबारगी उसकी इच्छा हुई कि रिक्शे से उतर जाए।
- किसी कार के हार्न से चौंककर वह वर्तमान में आ गया।
- उसके लिए यह चढ़ाई खास मायने नहीं रखती थी।
- वह अपराधी की भाँति सिर झुकाए चल रहा था।

➤ **यात्री का मन संघर्ष से भरा था। वह अपना संघर्ष डायरी में लिख रहा है। वह डायरी लिखें।**

- असलम की मृत्यु की खबर
- असलम के प्रति अपना व्यवहार
- हमदर्दी का अभाव
- पश्चाताप से उत्पन्न अनुताप

डायरी की परख, मेरी ओर से

- *घटना की सूचना है।*
- *संवेदना की अनुभूति है।*
- *आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है।*
- *आत्मपरक शैली है।*

➤ **नीचे दिए मुद्दों के आधार पर अनुताप शीर्षक की सार्थकता पर अपना विचार प्रकट करें-**

- पाठ के केंद्र-भाव को सूचित करता है।
- चरमसीमा तक पढ़ने को प्रेरित करता है।
- संक्षिप्त, पर स्पष्ट है।
- सार्थक एवं संगत है।

Specimen

जयशंकर प्रसाद

जन्म	:	30 जनवरी 1889, वाराणसी, उत्तर प्रदेश	
मृत्यु	:	14 जनवरी 1937	
प्रमुख रचनाएँ	:	काव्य	- झरना, आँसू, लहर, प्रेम-पथिक, कामायनी
		नाटक	- स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, अजातशत्रु
		कहानी-संग्रह	: छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल
		उपन्यास	: कंकाल, तितली, इरावती
विशेषताएँ	:	* प्रतिभाशाली रचनाकार। * साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन। * छायावादी कवियों में अग्रणी। * तत्सम-प्रधान शब्दावली का समर्थक। * गीतिशैली का प्रयोक्ता।	
देन	:	काव्य में अतिशय कल्पना का संचार करके कविता को आम धरातल से उठा दिया।	

आधुनिक हिंदी कविता की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है छायावाद। प्रेम, प्रकृति, सौंदर्य, मानवीकरण, लाक्षणिकता, चित्रमयता, काल्पनिकता, कोमलकांत पदावली, मधुरता, सरसता आदि छायावादी कविता की पहचान हैं। प्रसाद की **मधुऋतु** कविता में छायावाद की सारी विशेषताएँ समाहित हैं।

छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता...

Specimen

मधुऋतु

अरे आ गई है भूली-सी
यह मधुऋतु दो दिन को,
छोटी-सी कुटिया मैं रच दूँ,
नई व्यथा साथिन को!
वसुधा नीचे ऊपर नभ हो,
नीड़ अलग सबसे हो,
झाड़खंड के चिर पतझड़ में
भागो सूखे तिनको!
आशा से अंकुर झूलेंगे
पल्लव पुलकित होंगे,
मेरे किसलय का लघुभव यह,
आह, खलेगा किनको?
सिहर भरी कँपती आवेंगी
मलयानिल की लहरें,
चुंबन लेकर और जगाकर-
मानस नयन नलिन को।
जवा कुसुम-सी उषा खिलेगी
मेरी लघुप्राची में,
हँसी भरे उस अरुण अधर का
राग रँगेगा दिन को।
अंधकार का जलधि लाँघकर
आवेंगी शशि-किरनें
अंतरिक्ष छिड़केगा कन-कन
निशि में मधुर तुहिन को
इस एकांत सृजन में कोई
कुछ बाधा मत डालो
जो कुछ अपने सुंदर से हैं
दे देने दो इनको।

'सूखे तिनको' से क्या तात्पर्य है?

'उषा' शब्द किन-किन की ओर इशारा करता है?

Specimen

अनुवर्ती कार्य

➤ **छायावाद में कवि कोमल पदावलियों का प्रयोग करते थे। निम्नलिखित शब्दों के स्थान पर कविता में प्रयुक्त शब्द छाँटकर लिखें।**

वसंत, मौसम, भूमि, आकाश, जंगल, शिशिर, कलि, किसलय, मलयसमीर, आँख, कमल, प्रभात, पूरब, समुद्र, चाँद, रात

➤ **निम्नलिखित पंक्तियों का आशय व्यक्त करें।**

इस एकांत सृजन में कोई
कुछ बाधा मत डालो
जो कुछ अपने सुंदर से हैं
दे देने दो इनको।

➤ **निम्नलिखित छायावादी प्रवृत्तियों को सूचित करनेवाली पंक्तियाँ लिखें।**

- प्रकृति चित्रण
- मानवीकरण
- सौंदर्यवर्णन
- प्रेमानुभूति

➤ **कविता पर आस्वादन-टिप्पणी लिखें।**

आस्वादन-टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *कवि का परिचय है।*
- *कविता की काव्यधारा और रचनाकाल की सूचना है।*
- *कविता का सार है।*
- *अपने दृष्टिकोण में कविता का विश्लेषण किया है।*

(काव्यधारा और रचनाकाल के अनुरूप भाषा, प्रतीक आदि।)

इन बिंदुओं पर ध्यान देते हुए कविता का आलाप करें।

- भावानुकूल प्रस्तुति
- उचित ताल-लय
- सटीक शब्द-विन्यास

Specimen

सूचना का अधिकार अधिनियम

पत्र-व्यवहार

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जन-साधारण ही देश का असली मालिक होता है। मालिक होने के नाते जनता को यह जानने का हक है कि जो सरकार उसकी सेवा के लिए बनाई गई है, वह क्या, कहाँ और कैसे कर रही है।

2005 में देश की संसद ने एक कानून पारित किया जो 'सूचना का अधिकार अधिनियम 2005' के नाम से जाना जाता है। इस अधिनियम में व्यवस्था की गई है कि किस प्रकार नागरिक सरकार से सूचना माँगेंगे और किस प्रकार सरकार जवाबदेह होगी।

सूचना का अधिकार अधिनियम हर नागरिक को अधिकार देता है कि वह सरकार से कोई भी सवाल पूछ सके या कोई भी सूचना ले सके, किसी भी सरकारी दस्तावेज़ की प्रमाणित प्रति ले सके, किसी भी सरकारी दस्तावेज़ की जाँच कर सके, किसी भी सरकारी काम की जाँच कर सके, किसी भी सरकारी काम में इस्तेमाल सामग्री का प्रमाणित नमूना ले सके। लेकिन इस नियम में सैन्य बल, सी.बी.आई जाँच ज़ारी रहनेवाले मामले, विदेशी सरकारों से विश्वास के नाते प्राप्त तथा मान्य व्यक्ति के उपचार और बीमारी से जुड़ी सूचनाएँ प्रदान करने से इनकार किया जा सकता है।

आम जनता की सुरक्षा तथा भलाई के लिए संसद द्वारा पारित अधिनियम का फ़ायदा उठाने हेतु...

Specimen

यह हमारा अधिकार है...

सत्यमेव जयते

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005

(2005 का अधिनियम संख्यांक 22)

[15 जून, 2005]

प्रत्येक लोक प्राधिकारी के कार्यकरण में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के संवर्धन केलिए,
लोक प्राधिकारियों के नियंत्रणाधीन सूचना तक पहुँच सुनिश्चित करने
के लिए नागरिकों के सूचना के अधिकार की व्यावहारिक शासन
पद्धति स्थापित करने, एक केंद्रीय सूचना आयोग तथा
राज्य सूचना आयोग का गठन करने और उनसे
संबंधित या उनसे आनुषंगिक
विषयों का उपबंध
करने के लिए
अधिनियम ।

(भारत का राजपत्र असाधारण)

Specimen

कोलाज देखें...

इस दृश्य ने आपके दिल में कौन-सी प्रतिक्रिया जगाई ?

➤ **कोलाज के लिए उचित पादटिप्पणी लिखें।**

पादटिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *लक्ष्यार्थ पर केंद्रित है।*
- *समूचे भाव को आत्मसात किया है।*
- *प्रभावशाली है।*

सार्वजनिक सूचना अधिकारी के नाम पत्र...

Specimen

सेवा में,

सार्वजनिक सूचना अधिकारी
रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार।

1.	आवेदक का नाम	हरिता. एम
2.	डाक का पूरा पता	हरितम, शांति नगर, तिरुवनंतपुरम-22
3.	सूचना का विषय	बालश्रम को रोकने के लिए रोज़गार मंत्रालय द्वारा की गई कार्रवाइयों से संबंधित।
4.	माँगी गई सूचना का विवरण	1. क्या भारत में बालश्रम पर कानूनी रोक है? तो बालश्रम रोकने और उसके खिलाफ़ समाज को सचेत करने के कौन कौन-से प्रावधान हैं? 2. मंत्रालय द्वारा रोज़गार जगहों में सूचना-पट लगवाने की कौन कौन-सी कार्रवाइयाँ ली गई हैं? 3. बालश्रम के बारे में पता चलने पर किस कार्यालय में सूचना देनी है? कार्यालय का दूरभाषा उपलब्ध करा सकते हैं? बालश्रम के लिए प्रेरित करनेवालों को मिलनेवाला अधिकतम दंड क्या है?
5.	सूचना डाक या दस्ती में।	डाक द्वारा।

आवेदक

तिरुवनंतपुरम
10-07-2014

हरिता एम.
हरितम, शांति नगर
तिरुवनंतपुरम-22

Specimen

अनुवर्ती कार्य

➤ **पत्र के आधार पर लिखें।**

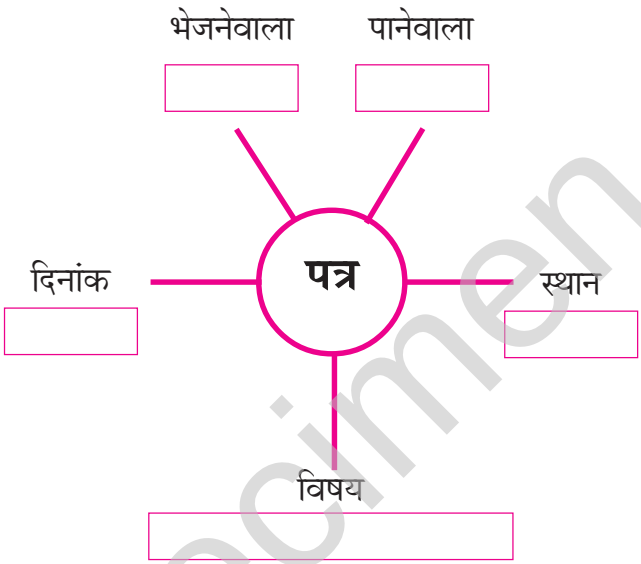

➤ **पाठकनामा पढ़ें**

सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूल चिट्टारिपरंब में लगभग तीन हज़ार छात्र अध्ययन कर रहे हैं। वे शहर की विभिन्न जगहों से आते हैं। अधिकांश छात्र बस का सहारा लेते हैं। बस कम होने की वजह से छात्रों को बड़ी परेशानी होती है। अधिकारियों के सामने कई बार यह समस्या लाई गई, पर कोई फायदा नहीं हुआ। जल्द-ही-जल्द इसपर कार्रवाई करने की ज़रूरत है।

राजेश कुमार
सदस्य, अध्यापक-अभिभावक संघ

पाठकनामा के विषय पर क्या कार्रवाई की गई, उसकी जानकारी पाने के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी, सड़क परिवहन कार्यालय, कण्णूर के नाम एक सूचना अधिकार पत्र तैयार करें।

Specimen

चित्रा मुद्गल

जन्म	:	10 दिसंबर 1944, चेन्नै (तमिलनाडु)
प्रमुख रचनाएँ	:	उपन्यास - गिलिगडु, आवाँ, एक ज़मीन अपनी
		कहानी-संग्रह - भूख, लपटें, मामला आगे बढ़ेगा अभी, पेंटिग अकेली है
		नाट्यरूपांतर - पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, सद्गति, जुलूस
पुरस्कार	:	इंदुशर्मा कथा सम्मान
		उत्तरप्रदेश साहित्य भूषण
		के.के. बिड़ला फाउंडेशन का व्यास सम्मान
विशेषताएँ	:	* बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा।
		* स्त्री-पुरुष समभावना पर बल।
	:	* नारी-उत्पीड़न के प्रति विरोध।
देन		उपेक्षित एवं उत्पीड़ित भारतीय नारी के लिए समर्पित साहित्य।
संप्रति	:	विभिन्न नारी संघों की संचालिका
ई-मेल	:	mail@chitramudgal.info

कहानी-सम्राट प्रेमचंद की कहानी का, चित्रा मुद्गल का नाट्यरूपांतर है **जुलूस**। हिंदी कथा साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कथाकार हैं प्रेमचंद। कल्पना की उड़ान भरती कहानी को सचाई के धरातल पर ला खड़ा करके प्रेमचंद ने साधारण जनता की पीड़ा को वाणी दी। जुलूस कहानी देशप्रेम को मुखरित करती है। चित्रा मुद्गल ने प्रस्तुत कहानी का नाट्यरूपांतर किया है। लेखिका ने कहानी को दृश्यों में बाँटा है और उन्होंने संवाद के द्वारा कहानी के साथ न्याय किया है। इस कहानी के नाट्यरूपांतर के पीछे एक आकस्मिक घटना है।
(घटना जानने के लिए देखें परिशिष्ट पृष्ठसंख्या 105 -107 चित्रा मुद्गल की ई-मेल)

हिंदी के कालजयी कहानीकार प्रेमचंद के प्रति नई पीढ़ी की सशक्त लेखिका चित्रा मुद्गल की श्रद्धांजलि....

Specimen

जुलूस

(नेपथ्य में, स्वराजियों का जुलूस आ रहा है। लोग अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ नारे लगा रहे हैं और भारत माता की जय-जयकार कर रहे हैं।)

अंग्रेज़ो भारत छोड़ो!
अंग्रेज़ो भारत छोड़ो!
जय भारत माता!

Specimen

(सड़क से लगे बाज़ार में दूकानदार बहस कर रहे हैं।)

शंभुनाथ : *(नारों को सुनकर व्यंग्य से)* देख रहे हैं न दीनदयाल जी! सबके सब काल के मुँह में जा रहे हैं। स्वराज लाने चले हैं। आगे पुलिस सवारों का दल खड़ा हुआ है, मार-मार कर भगा देगा।

दीनदयाल : महात्मा जी भी सठिया गए हैं शंभुनाथ भैया! जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो कब का मिल गया होता! तनिक देखो तो, जुलूस में हैं कौन? लौंडे-लफ़ंगे सिर-फ़िरे! शहर का कोई बड़ा आदमी दिख रहा? तो फिर हमें क्या पड़ी है अपनी दुकान बंद कर जुलूस में आएँ?

(बाज़ार में चप्पलें बेच रहा मैकू उन दोनों की बातें सुन ठठाकर हँस पड़ता है)

शंभुनाथ : *(चिढ़कर)* तू अपनी चट्टियाँ और चप्पलें बेच मैकू, ठिठया काहे रहा? लगता है आज बिक्री अच्छी हो गई?

मैकू : बिक्री-विक्री छोड़ो शंभू भैया। हँस रहा हूँ, तुम्हारी बात पे!

शंभुनाथ : किस बात पे?

मैकू : अरे बड़े आदमी काहे जुलूस में आने लगे? अंग्रेज़ी राज में उन्हें कौन कमी। ठाठ से बंगलों और महलों में रहते हैं। मोटरों में घूमते हैं। मर तो हम लोग रहे, जिनकी रोटियों का ठिकाना नहीं!

Specimen

शंभुनाथ : *(कटाक्ष से)* तुम यह सब बातें क्या समझोगे मैकू! जिस काम में चार बड़े आदमी अगुआ होते हैं... सरकार पर भी उसकी धाक बैठ जाती है। लौंडे-लफ़ंगों का ग़ोल भला हाकिमों की निगाह में क्या जँचेगा?

मैकू : हमारा बड़ा आदमी तो वही है जो लंगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमता है। जो हमारी दशा सुधारने के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है। वह है महात्मा गाँधी। उसके आगे हमें किसी बड़े आदमी की परवाह नहीं!

(नेपथ्य में जुलूस के नारे प्रखर होने लगते हैं)

दीनदयाल : नया दारोगा बीरबल सिंह बड़ा जल्लाद है मैकू। जुलूस के चौरास्ते पर पहुँचते ही हंटर लेकर पिल पड़ेगा। फिर देखना ये स्वराजी कैसे दुम दबा कर भाग खड़े होंगे! उधर देख मैकू! देख! सिपाहियों ने जुलूसियों को रोक दिया है...।

(संगीत)

(दृश्यांतर)

(सिपाहियों के साथ घोड़े पर सवार दारोगा बीरबल स्वराजियों पर गरजता है)

बीरबल सिंह : रुक जाओ... तुम लोगों को आगे जाने का हुक़्म नहीं है!

(जुलूस में दबी ज़ुबान से खुसुर-फ़ुसुर–ये नया दारोगा है... हाँ भई, इसीका नाम बीरबल

Specimen

सिंह है!... सुना है बड़ा जल्लाद है... शांत भाइयो! शांत! सुनो इब्राहिम अली दारोगा से क्या कह रहे हैं?)

इब्राहिम अली : *(ऊँचे स्वर में)* दारोगा साहब! मैं आपको इत्मीनान दिलाता हूँ कि किसी क़िस्म का दंगा-फ़साद न होगा! हम दुकानें लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं... हमारा मक़सद इससे कहीं ऊँचा है!

बीरबल सिंह : इब्राहिम साहब! मुझे यह हुक्म है कि जुलूस यहाँ से आगे न जाने पाए।

इब्राहिम अली : आप अपने अफ़सरों से ज़रा पूछ न लें?

बीरबल सिंह : मैं इसकी कोई ज़रूरत नहीं समझता।

इब्राहिम अली : तो हम लोग यहीं बैठते हैं! जब आप लोग चले जाएँगे तो हम निकल जाएँगे!

बीरबल सिंह : यहाँ खड़े होने का भी हुक्म नहीं है! आप लोगों को वापस जाना पड़ेगा!

इब्राहिम अली : *(गंभीरता से)* वापस तो हम न जाएँगे! आपको या किसीको हमें रोकने का कोई हक़ नहीं है। आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते हैं, रोक लीजिए। मगर आप हमें लौटा नहीं सकते।

बीरबल सिंह : *(तैश में)* हमारा हुक्म क्या आपको सुनाई नहीं पड़ा?

Specimen

इब्राहिम अली : न जाने वह दिन कब आएगा, जब हमारे भाईबंद ऐसे हुक़्मों की तामील करने से साफ़ इनकार कर देंगे जिनकी मंशा महज़ क़ौम को गुलामी की जंजीरों में जकड़े रखना है।

बीरबल सिंह : *(विनम्र होकर)* डी.एस.पी साहब आ रहे हैं इब्राहिम साहब! उससे पहले आप लोग वापस लौट जाएँ!

(स्वराजी समवेत स्वर में... हम नहीं जाएँगे! हम नहीं जाएँगे!)

बीरबल सिंह : फिर से सोच लें! बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा!

(स्वराजी समवेत स्वर में... हमें कोई मलाल नहीं... भारत माता की जय... जय भारत जय भारत।)

बीरबल सिंह : *(आदेशात्मक स्वर में)* सिपाहियो, लाठी चार्ज करो!

(लाठी चार्ज की ध्वनि। घोड़ों की टापों और हिनहिनाने की आवाज़ों के बीच स्वराजियों के घायल होने के आर्त स्वर)

बीरबल सिंह : *(चेतावनी भरे स्वर में)* अभी भी वक़्त है, इब्राहिम अली साहब... आप मेरे सामने से हट जाएँ!

इब्राहिम अली : *(चुनौती भरे स्वर में)* आप बेटन चलाएँ दारोगा जी!

Specimen

(सिर पर बेटन से वार होते ही इब्राहिम अली की कारुणिक आह निकलती है... और अगले ही पल उनका सिर घोड़े की टापों के नीचे आकर फट जाता है। स्वाधीनता सेनानी अधीर हो आते हैं।)

स्वराजी 1 : *(घबराए स्वर में)* अरे देखो-देखो! दारोगा ने अपना घोड़ा इब्राहिम साहब के ऊपर चढ़ा दिया। उनका सिर फट गया!

स्वराजी 2 : सिर से खून निकल रहा है... जल्लाद दारोगा! अंग्रेज़ों का पिट्ठू है तू...

स्वराजी 3 : हम किराए के टट्टू नहीं है जो तेरी निर्दयता से डरकर पलट लें। स्वाधीनता के सच्चे सेवक हैं। अपनी जान दे देंगे मगर भारत माँ के हाथों में बेड़ियाँ नहीं बरदाश्त करेंगे... भारत माता की जय। *(सभी स्वराजी दुहराते हैं। साथ ही चारों ओर चीख-पुकार के आर्त स्वर गूँजते हैं)*

(संगीत–आज़ादी के किसी गीत की धुन)

(दृश्यांतर)

(बाज़ार में धड़ाधड़ दुकानों के शटर गिरने लगते हैं। तनाव-भरी टिप्पणियाँ–

1. *सुनते हो, इब्राहिम अली घोड़े से कुचल गए...*
2. *कई स्वराजी जख्मी हो गए... न वे पीछे हटते हैं,न पुलिस उन्हें आगे जाने देती है...*
3. *शहर में तनाव फैल रहा है।)*

Specimen

मैकू : अब तो भाई, रुका नहीं जाता... मैं भी जुलूस में शामिल होऊँगा...

दीनदयाल : दुकान बंद कर मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ मैकू! शंभू, तुम क्या सोच रहे हो?

शंभुनाथ : विरोध में पूरा बाज़ार बंद हो रहा... मैं कैसे अपनी दुकान खुली रख सकता हूँ? एक दिन तो मरना ही है, जो कुछ होना है हो... आखिर वे लोग, सभी के लिए तो जान दे रहे हैं!

(नेपथ्य से सैकड़ों लोगों की उत्तेजित आवाज़ आती है– मारो! मारो! सिपाहियों को मारो! ये अपने ही भाई-बंधु हैं मगर अंग्रेज़ों के पिट्ठू बन गए हैं)

(संगीत-आज़ादी की धुन)

(दृश्यांतर)

(उमड़ती चली आ रही उत्तेजित भीड़ का स्वर नज़दीक आ रहा है। तभी एक मोटरकार के स्टार्ट होने की ध्वनि।)

बीरबल सिंह : *(घबड़ाकर)* अरे, डी.एस.पी. साहब तो चल दिए? अब मैं क्या करूँ अहिंसा के व्रतधारियों पर डंडे बरसाना और बात है, हिंसक भीड़ का सामना करना और! *(आदेशात्मक स्वर में)* सिपाहियो! आहिस्ता से पीछे हट लो! *(घोड़ों की टापों के मुड़ने का स्वर)*

Specimen

इब्राहिम अली : *(कराहते हुए)* क्यों कैलाश, ये आवाज़ें कैसी हैं? क्या लोग शहर से आ रहे हैं?

कैलाश : *(चिंतित होकर)* जी हाँ... हज़ारों आदमी हैं!

इब्राहिम अली : तो अब ख़ैरियत नहीं! झंडा लौटा दो! हमें फ़ौरन लौट चलना चाहिए! नहीं तो तूफ़ान मच जाएगा। हमें अपने भाइयों से लड़ाई नहीं करनी है। कहो कहो सबसे, वापस लौट चलें!

कैलाश : ये आप क्या कर रहे, उठने की कोशिश क्यूँ कर रहे? जैसा आप कहेंगे, वैसा ही होगा। *(लोगों की ओर मुड़कर)* भाइयो, इब्राहिम चाचा के लिए जल्दी से स्ट्रेचर तैयार करो। झंडियों के बाँसों को साफ़ों और रूमालों से बाँधो! जल्दी करो!

इब्राहिम अली : *(काँपती आवाज़ में)* लोगों की मनोवृत्ति में आया वह परिवर्तन ही हमारी असली विजय है। हमारा उद्देश्य केवल जनता की सहानुभूति प्राप्त करना है। उनकी मनोवृत्ति को बदल देना है। जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा! जय भारत। *(सभी जोशीले स्वर में जय भारत दोहराते हैं)*

(संगीत-आज़ादी की धुन)

Specimen

अनुवर्ती कार्य

➤ **समानार्थी शब्द नाटक में ढूँढ़ें-**

दृश्य - 1 जनयात्रा, विरुद्ध, विक्रय, शासक, चिंता, निर्दय

दृश्य - 2 आज्ञा, वाणी, प्रकार, लक्ष्य, पालन, इच्छा, केवल, देश, हानि, विषाद, सहन

दृश्य - 3 घायल, अंत

दृश्य - 4 पास, धीरे, कुशल, ओजपूर्ण

➤ **निम्नलिखित कथन किस पात्र का है ?**

* *हमें किसीसे लड़ाई करने की ज़रूरत नहीं।*
* *हमारा हुक्म क्या आपको सुनाई नहीं पड़ा?*
* *जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो कबका मिल गया होता।*
* *हमारा बड़ा आदमी तो वही है जो लंगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमता है।*
* *एक दिन तो मरना ही है, जो कुछ होना है हो।*
* *मर तो हम लोग रहे जिनकी रोटियों का ठिकाना नहीं।*
* *हमारा मक़सद इससे कहीं ऊँचा है।*

➤ **निम्नलिखित कथन इब्राहिम अली के चरित्र की किन-किन विशेषताओं को उजागर करता है ?**

* हम दुकानें लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं।
* आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते हैं—रोक लीजिए ! मगर आप हमें लौटा नहीं सकते।
* हमारे भाईबंद ऐसे हुक्मों की तामील करने से साफ़ इनकार कर देंगे।
* जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा।

➤ **उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी करें ।**

Specimen

टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *चरित्र पर प्रकाश डालनेवाले संवादों का विश्लेषण किया है।*
- *चरित्र की विशेषता समझी है।*
- *विशेषताओं के आधार पर टिप्पणी लिखी है।*
- *चरित्र की विशेषताओं का समर्थन अपने दृष्टिकोण से किया है।*

नाटक का मंचन करें ।

मंचन की गतिविधियाँ

नाटक-वाचन

यह वैयक्तिक/दलीय हो सकता है। वाचन के द्‌वारा पूरे नाट्‌यदल कथा से तादात्म्य स्थापित करता है।

मंचन पूर्व चर्चा

नाटक की पृष्ठभूमि, तकनीकी क्षेत्र, पात्र आदि में सही अवधारणा उत्पन्न करने में यह चर्चा काम आती है। इससे कथापात्र के अनुरूप अभिनेता के चयन में ठीक दिशा मिल जाती है।

मंच की अवधारणा

प्रकाश, शब्द-विन्यास, मेक-अप, मंच-निर्माण आदि मंच के अनिवार्य अंग हैं, हालांकि कक्षा-प्रस्तुति के समय स्कूल में उपलब्ध सामग्रियों से काम चला सकते हैं।

सृजनपरता

नाटक की पटकथा, मंचन के लिए एक रूपरेखा मात्र है। निदेशक तथा अभिनेता कल्पना और क्षमता के अनुरूप मंचन को सृजनात्मक बनाएँ।

Specimen

शब्दार्थ

अनुताप

नज़दीक - पास
लापरवाही - बेफ़िक्री
भला-चंगा - अच्छा-खासा
गुर्दा - Kidney
दम तोड़ना - मरना
सन्नाटा - सनसनाहट
आगोश - Embrace
एकबारगी - जल्दी
हमदर्दी - सहानुभूति
बेवकूफ़ी - मूर्खता
अनाप - बकवास
गद्दी - आसन
एकाएक - अचानक
कदकाठी - Healthy
सरेआम - खुलकर

मधुऋतु

भूली-सी - मार्गच्युत
मधुऋतु - वसंत ऋतु
कुटिया - छोटी झोंपड़ी
साथिन - सहेली
नीड़ - घोंसला
झाड़खंड - जंगल
पतझड़ - पत्तों का झड़ना
तिनका - सूखी घास का छोटा टुकड़ा
अंकुर - कली
झूलना - लहराना
लघुभव - लघुसंसार
खलेगा - बुरा लगेगा
सिहर भरी - रोमांच भरी
मलयानिल - मलयपर्वत की ओर से आनेवाली हवा
नलिन - कमल
जवाकुसुम - लाल रंग का फूल
लघुप्राची - पूर्व
जलधि - समुद्र
लांघकर - पारकर
निशि - रात
तुहिन - हिमकण

यह हमारा अधिकार है...

सूचना का अधिकार - Right to information
हक - अधिकार
संसद - Parliament
जवाबदेह - उत्तरदायी
दस्तावेज़ - अभिलेख

Specimen

जाँच	-	पूछताछ
इस्तेमाल	-	उपयोग
बालश्रम	-	Child Labour
सार्वजनिक सूचना अधिकारी	-	Public Information Officer
दस्ती	-	By hand
रोज़गार मंत्रालय	-	Ministry of Labour
उपलब्ध	-	प्राप्त
आदेश	-	Order
प्रावधान	-	तैयारी
दूरभाष	-	Telephone
कार्रवाई	-	Action
सड़क परिवहन कार्यालय	-	Road Transport Office

जुलूस

सठियाना	-	बुड्ढ़ा होना
लौंडे-लफ़ँगे	-	चरित्रहीन छोकरे
ग़ोल	-	भीड़
ठठाकर	-	ज़ोर से
चट्टी	-	काठ की बनी चप्पल
ठिठक	-	संकोच
ठाठ	-	सुरक्षा
ठिकाना	-	जगह
धाक	-	प्रतिष्ठा
जल्लाद	-	निर्दय
हंटर	-	चाबुक
खुसुर-फ़ुसुर	-	काना-फ़ूसी
इत्मीनान	-	विश्वास
दंगा-फ़साद	-	लड़ाई-झगड़ा
मक़सद	-	उद्देश्य
सवार	-	घुड़सवार
संगीन	-	Bionet
तैश में	-	क्रोध में
भाईबंद	-	स्वजन
तामील	-	आज्ञा का पालन
मंशा	-	इच्छा
महज़	-	केवल
क़ौम	-	वंश
पिट्ठू	-	अनुयायी
मलाल	-	दुख
टट्टू	-	छोटे कद का घोड़ा
बर्दाश्त करना	-	सहन करना
खैरियत	-	कुशल-मंगल
झंडी	-	ध्वज
साफ़ा	-	पगड़ी

Specimen